आधुनिक संस्कृत विद्वान् बच्चूलाल अवस्थी 'ज्ञान' द्वारा रचित 'क एते' और 'क्व यतास्ते' ।

'क एते' एवं **'क्व यतास्ते'** यह दोनों कविता बच्चूलाल अवस्थी द्वारा रचित **'प्रतानिनी'** से गृहीत है । **'प्रतानिनी'** में कुल 130 कविता-गजल हैं । बीसवीं शताब्दी में उर्दू एवं फारसी काव्यपरंपरा के छंदों का संस्कृत कविता में अवतरण हुआ । इसके बाद हिंदी, सिंधी,काश्मीरी, गुजराती आदि अनेक भारतीय भाषाओं में उर्दू काव्य शिल्प की चर्चित एवं हृदयग्राही विधा गजल लोकप्रिय होने लगी । ग़ज़ल की लोकप्रियता का प्रमुख कारण उसकी गति एवं यति है । संस्कृत साहित्य में गजल के प्रवर्तक के रूप में भट्ट मथुरानाथ शास्त्री का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने उर्दू, फारसी, छन्दशास्त्र का निर्वाह करते हुए अपनी ग़ज़ले लिखी ।

क एते

नमन्तः......................क एते ॥१॥ (In Book)

डंडी मारने वाले(माप-तौल में गड़बड़ी करने वाले) कुटिल (अथवा धूर्त) बुद्धिवाले भलेमानुष का दिखावा करते हुए हाथ उठाकर प्रणाम करने वाले(**नमन्तः**) ये नाटकबाज(अभिनेता) कौन हैं(**क एते**) ?

अयोवर्मणा................क एते ॥२॥(In Book)

स्वयं को लौह(**अयस्**) निर्मित कवच(**अयोवर्मणा**) आच्छादित कर(**आवृत्य**) चुंबक(**अयस्कान्त**) युक्त कुएँ(**कूप**) (बर्तन) में सोने-चांदी सरीखे बहुमूल्य धातु(आभूषण) को फेंकने वाले(**क्षिपन्तः**)(सोना चुराने वाले) ये कौन हैं ?

स्वपन्तं..................क एते ॥३॥(In Book)

भय से रहित(भयमुक्त) सोते हुए(**स्वपन्तं**) सिंह(**मृगेन्द्र**) को ढोल-नगाड़े(**निनादैः**) की आवाज से आतंकित(भयभीत) करने वाले ये कौन हैं ?

प्रदीपस्य................क एते ॥४॥(In Book)

प्रज्वलित(दीपक) को(**प्रदीपस्य**) बुझाने के लिए(**निर्वापणाय**) प्रयुक्त(**प्रयुक्ताः**) यह पतंगे(कीड़े)(**पतङ्गाः**) जो (दीपक) के चारों ओर गिरे हुए हैं,(**पतन्तः**) कौन हैं? अर्थात् आगे बढ़ते हुए(उन्नतिशील, प्रगतिपथ पर आरुढ़) व्यक्ति को पीछे करने हेतु उसकी टांग खींचने हेतु अथवा उसके रास्ते में रोड़ा बिछाने वाले, पग-पग पर व्यवधान डालने वाले ये कौन हैं ?

विहाय..................क एते ॥५॥(In Book)

कल्पवृक्ष के फूलों को छोड़कर(आसानी से प्राप्त फल को छोड़कर) खुशी-खुशी(**मुदा**) बाण(**शल्य**) की शय्या(कँटीली राह) का वरण(**वृणन्तः**) करने वाले ये कौन हैं?

हतं........................क एते ॥६॥(In Book)

पुराणों में(**पुराणेषु**) रक्तबीज के वध की बात सुनी है हमने । युद्ध में(**रणे**) भद्रकाली को छलने वाली(**छलन्तः**) ये कौन हैं ?

सदाचारवादान्........................क एते ॥७॥(In Book)

सदाचारवादियों को(भी) शिक्षा देने वाले, सदाचारवादियों के समान शिक्षा(उपदेश) करने वाले यह नीच(अधम) कौन हैं ?

ऋते........................क एते ॥८॥(In Book)

तुम्हारे प्रेम के अलावा कुछ भी नहीं है ऐसा कहकर बिना प्रेम के ही गले में बाहें डाल देने वाले(**बाहुमावेष्टयन्तः**)(अत्यधिक प्रेम-आदर प्रदर्शित करने वाले) ये कौन हैं ?

स्वयं........................क एते ॥९॥(In Book)

स्वयं न्यायधीश की प्रभुता(**प्रभुत्वं**) प्राप्त कर दूसरे के लिए(**परस्वे**) स्वार्थ को ध्यान में रखकर निर्णय करने वाले यह कौन हैं ?

परेषां........................क एते ॥१०॥(In Book)

दूसरों को(**परेषां**) मदिरापान(**सुराभाजनं**)(मद्यपान) से रोकने वाले, स्वयं मदिरापान करने वाले ये कौन हैं ?(जिनकी कथनी और करनी में मेल नहीं है- ऐसे ये कौन हैं जो दूसरों को 'मद्यपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है', 'शराब नहीं पीना चाहिए'- ऐसा कहते हैं, परंतु स्वयं मदिरापान करते हैं ?

महत्त्वं........................क एते ॥११॥(In Book)

दूसरों की प्रशंसा करने में खिन्नता का अनुभव करने वाले(परंतु) अपनी बड़ाई खूब बढ़ा-चढ़ाकर करने वाले(अपने मुँहमियाँ मिट्ठू) ये कौन हैं ?

अये........................क एते ॥१२॥(In Book)

(सुंदर सुहावने बगीचे अथवा एकांत रम्य स्थान को देखते हुए) 'अरे' यह नंदनवन है'- ऐसा बोलते हैं सड़क पर या सड़क के किनारे प्रेमालाप करते हुए या चुंबन करते हुए जोड़े ये कौन हैं ?

भावार्थ- अवस्थीजी द्वारा रचित **'क एते'** और **'क्व यतास्ते'** उत्कृष्ट ग़ज़ल गीती हैं। **'क एते'** इस ग़ज़ल के माध्यम से कवि बच्चूलाल अवस्थी जी ने समाज के उन कुटिल, धूर्त, धोखेबाज एवं चालबाज लोगों पर निशाना साधा है जिनके खाने के दाँत और एवं दिखाने के दाँत कुछ और हैं। ऐसे लोग दिल के काले हैं, परंतु समाज में अच्छा बनने एवं होने का ढोंग करते हैं। भोले-भाले, सीधे-साधे लोग इनकी चिकनी-चुपड़ी बातों में आकर इनके छद्म से अनभिज्ञ रहने के कारण ठगी का शिकार होते हैं। यह लोग ऐसे लोग हैं जिनके चौका और चौकी में कोई साम्य नहीं होता अर्थात् इनकी कथनी और करनी में कोई मेल नहीं होता। ऐसे अधमी, स्वार्थी लोगों से सावधान रहने की ताकीद करते हैं। साथ ही आज की युवापीढ़ी के विचार-व्यवहार खुलापन, एवं पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण की निंदा करते हैं(विशेष रूप से प्रेम आलाप की निंदा करते हैं) जो हमारी सभ्यता और संस्कृति के लिहाज से शोभनीय नहीं है।

क्क यतास्ते

दृशोरावर्जकाः.........................क्क यतास्ते ॥१॥(In Book)

आनंदप्रदायिनी, कल्याणकारी आंखों की सुषमा(भ्रू विलासादि)रूपी धन कहां चला गया ? हृदय में स्फूर्ति का संचार करने वाले वे अलंकार कहाँ चले गए ?

इयं.........................क्क यतास्ते ॥२॥(In Book)

यह वात्सल्यभूमि है अथवा दिव्यभूमि(कामनाओं को पूर्ण करने वाली), कामदेव को भी(अपने सौंदर्य से) पराजित करने वाले अथवा कामनाओं का त्याग करने वाले वे प्रतिहारी कहां चले गए ?

प्रपञ्चो.........................क्क यतास्ते ॥३॥(In Book)

छल-प्रपंच(माया), प्रदर्शन(ढकोसला), ठगी(जालसाजी), डंडी मारने वाले(माप-तौल में गड़बड़ करने वाले) अथवा व्यापार में चलाकी करने वाले इन सबसे इतर वे कर्मयोगी कर्म ही जिनका श्रृंगार है) कहां चले गए ?

जगत्.........................क्क यतास्ते ॥४॥(In Book)

जगत् के जाल अथवा इंद्रजाल से आबद्ध अथवा माया-मोह के बंधन में पड़े हुए आंखें नीची करके तिरछी नजरों से देखने वाले(कूटचाल चलने वाले) कपटी, धूर्त, दुष्ट(चालबाज) से इतर वे दृष्टिसंचार कहां चले गए ?

शिरो.........................क्क यतास्ते ॥५॥(In Book)

अपने शिर, वक्षस्थल और केशों के प्रति अनुराग प्रदूषित करते हुए अर्थात् मधुर मुस्कान द्वारा स्नेह(प्रेम) प्रदर्शित कर भोले-भाले(सीधे-साधे) लोगों को अपने कपटजाल में फाँसकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने वाले बहुरूपिये(धोखेबाजों) से इतर कहाँ गए ?

अलं........................क्व यतास्ते ॥६॥(In Book)

अस्पष्ट वीणावादन अथवा अस्पष्टगायन पर 'अलं'(बस-बस, पर्याप्त है) ऐसा नम्र शब्दों द्वारा मना किए जाने पर भी जो अनुरक्त हैं(अपनी आसक्ति दिखाते हैं) ऐसे चिपकू जन से इतर लोग कहां गए ? अर्थात् हर जगह ऐसे ही लोग मिलते हैं समाज में जो झूठ, फरेब, प्रदर्शन के द्वारा अपने को हर जगह प्रतिष्ठित करना चाहते हैं । आज निस्वार्थ कर्म करने वाले योगी कहाँ ?

निमेषोन्मेषलीला........................क्व यतास्ते ॥७॥(In Book)

दन्तच्छद के कारण पलकों(आंखों) को झपकाने वाली अपनी प्रिया के घुंघट को उठाने पर जिसकी धड़कन बढ़ जाती है, एकटक दृष्टि से उसे देखते हुए प्रेमालाप के इच्छुक अपनी प्रिया के दर्शन मात्र से ही उसकी एक झलक पाकर ही पसीने से लथपथ(मानो ज्ञान पाकर) स्वयं को नियंत्रित कर लेते हैं, ऐसे वे जितेन्द्रिय कहाँ गए ?

चटुव्यवहारसौभाग्यं........................क्व यतास्ते ॥८॥(In Book)

धूर्ततापूर्ण व्यवहार से चापलूस व्यक्ति सज्जनों की कृपा दृष्टि पाने हेतु उनके नजदीकी (विश्वासपात्र) बनकर अपनी विद्वता की धाक जमाकर बड़े-बड़े पद, पुरस्कार एवं सम्मान पा लेते हैं । (इसके विपरीत) अपनी योग्यता(सुष्ठु काव्य रचना) के बल पर पद, सम्मान एवं पुरस्कार के हकदार कहाँ चले गए ?

भावार्थ- 'क्व यतास्ते' नामक गजल के माध्यम से कवि ने आज के बदलते आधुनिक माहौल में नारी की बदलती छवि की ओर इशारा किया है । नारी जिसे ममता की मूर्ति कहा जाता है और कोमलता जिसकी पहचान है । वह नारी जिसकी एक छवि पाने को नर बेताब रहता है, जिसकी एक नजर, एक बार दर्शन मात्र से व्यक्ति का जीवन बदल जाता है वह नारी के अब पहले के समान माधुर्यपूर्ण(सौम्य) नहीं रही बल्कि जीवन की वास्तविकता ने उसे खुद को बदलने पर मजबूर कर दिया है । वह **'स्व'** की पहचान समाज में स्थापित करने की जद्दोजहद में है । उसके भ्रू-कटाक्ष, विक्षेपादि जो कभी उसके गहने(आभूषणस्वरूप) थे आज वह मानो स्वयं उससे दूर होते जा रहे हैं । पुरुषों के साथ प्रतिस्पर्धा में सफलता हेतु अग्रसर उसने खुद को भुला दिया है । उसके लिए उस अस्त्र के मायने आज बदल गए हैं जो कभी नारी की पहचान थी । आज की इस धूर्ततापूर्ण, स्वार्थी एवं प्रपञ्चयुक्त दुनियाँ में कर्मयोगी एवं जितेन्द्रिय व्यक्ति कहां मिलेंगे ? जोड़-तोड़ की राजनीति हर क्षेत्र में हावी हो रही है । आज योग्यता के पारखी कहाँ ?